Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED JOURNAL, SEPT-OCT, 2018, VOL- 6/47

बालकेन्द्रित शिक्षा के पोषक गिजूभाई बधेका के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का अध्ययन'

शुभ्रा श्रीवास्तव Ph. D.
एसोसिएट प्रोफेसर (बी०एड०)
दिग्विजय नाथ पी०जी० कॉलेज, गोरखपुर

Abstract

आज के भाग दौड़ युक्त, मशीनी युग में बस्ते के बोझ से दबे हुए नन्हें मुन्हें बच्चों को डाँट डपट कर, डंडे के जोर पर अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के विपरीत रटा–रटा कर शिक्षा ग्रहण कराने वाली, अंको एवं प्रमाणपत्रों में जकड़ी शिक्षा प्रणाली के दौर में गिजूभाई बधेका के शिक्षा सम्बन्धी विचार अनमोल एवं प्रासंगिक हैं। शिक्षा की दकियानूसी विचारों परम्परा व पाठ्य पुस्तकीय प्रणाली की अवहेलना कर बालकों को स्वतंत्रता एवं स्वावलंबन देने के प्रबल समर्थक गिजूभाई ने बाल प्रयोग कर शिक्षा जगत को एक नई दिशा दी जिसकी सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि तो माण्टेसरी में है किन्तु तैयारी एवं क्रियान्वन ठेठ देसी है। अतः गिजूभाई द्वारा प्रतिपादित बाल केंद्रित शिक्षा सम्बन्धी विचारों को अपना कर ही बालकों को तनावयुक्त जीवन से तनाव मुक्त किया जा सकता है।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

गिजूभाई बधेका का जीवन– दर्शन –बाल शिक्षा के क्षेत्र में अपने कार्य एवं प्रयोगों द्वारा परिवर्तन करते हुए शिक्षा प्रणाली में नवीन सोच के सूत्राधार, बाल केंद्रित शिक्षा प्रणाली के प्रणेता महान शिक्षाविद गिजूभाई बधेका का जन्म 15 नवम्बर 1885 को सौराष्ट्र के चित्तल गांव में हुआ था। बचपन की कठोर, यातनापूर्ण विद्यालयी शिक्षा ने उनके कोमल मन को अत्यन्त प्रभावित किया था, जिससे वकालत जैसे पेशे को छोड़ कर गिजूभाई शिक्षा जगत से जुड़ गये एवं अपनी शक्ति को बाल जीवन के लिये समर्पित किया। 'माण्टेसरी मधर' नाम पुस्तक के अध्ययन ने तो उनके जीवन की दिशा ही परिवर्तित कर दी जिसके फलस्वरूप उन्होंने बाल जीवन, शिक्षक जीवन, सामाजिक जीवन और मानव जीवन को एक नये नजरिये से देखना शुरू किया। बालक स्वतंत्र है सम्मान योग्य है इस नये सत्य को अपनाते हुए बाल शिक्षा, मनोविज्ञान सम्बन्धी अनेक प्रयोग उन्होंने किये। बच्चों की स्वतंत्रता, स्वावलंबन एवं सम्मान की रक्षा तथा बाल शिक्षा को नई दिशा देने हेतु उन्होंने बाल साहित्य लेखन के साथ बाल मन्दिर की स्थापना की।

गिजूभाई एक प्रकृतिवादी शिक्षा शास्त्री थे। बच्चों में सृष्टि निर्माता की असीम शक्ति का अनुभव करते हुए उन्होनें बच्चों के संरक्षकों और अध्यापकों से अपेक्षा की कि वे इन बच्चों में उसी देवता के दर्शन करें, जिसने संसार को निर्मित किया है। उन्होनें 'बाल देवो भव' (Let the child be the

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

God) का नारा दिया जिसका तात्पर्य था विद्यालय एक मन्दिर है जिसमें पढ़ने वाले सभी छोटे–छोटे बच्चे ईश्वर के रूप में विद्यमान हैं। अतः पुजारी बन कर उन्हें ईश्वर मानते हुए उनसे प्रेम करिये। उनके साथ दुर्व्यवहार मत करिये उन पर अपना पूर्ण स्नेह लुटाइये। उन्होंने बाल मन्दिर का वातावरण इस कदर बदला कि, बाल जीवन सक्षम, समृद्ध और आनन्दमय बन सके।

गिजूभाई के शिक्षा सम्बन्धी विचार एवं सिद्धान्त – गिजूभाई ने शिक्षा को जीवन व्यापी प्रक्रिया मानते हुए कहा कि, इस प्रवृत्ति का उदगम हमारे भीतर से है। नई एवं पुरानी शिक्षा प्रणाली की तुलना करते हुए उन्होनें कहा कि पुरानी शिक्षा प्रणाली सरल रीति से प्रसन्न करके शिक्षा देती है। जब कि नई शिक्षा तब तक प्रतीक्षा करती है, जब तक कि खुशी की उत्पत्ति स्वयं नहीं होती। पुरानी शिक्षा पद्धति शिक्षण की सफलता का अंकन इस बात से करती कि ज्ञान कितना मिला, जब कि नई शिक्षा पद्धति शिक्षण का मूल्यांकन इस रूप में करती है कि हर प्रकार के ज्ञान को ग्रहण करने की बालक की शक्ति कितनी बढ़ी। इस प्रकार शिक्षा को बालकेंद्रित, स्वाभाविक प्रक्रिया विशेष मानते हुए बालकों को ज्ञात से अज्ञात (Known to Unknown) के द्वारा सिखाने के सिद्धान्त को अपनी शिक्षा योजना में महत्वपूर्ण स्थान दिया।

गिजूभाई स्वतंत्रता को प्राकृतिक 'सम्पत्ति के रूप में मानते हुए प्रत्येक बालक के जीवन में आजादी चाहते थे। किंतु बाल्यावस्था में कुछ ही स्वतंत्रतता चाहते थे। उनका मानना था कि, "वही शिक्षा प्राणवान है जो बालकों को स्वाधीनता के मार्ग पर आगे बढ़ाये क्यों कि स्वाधीन व्यक्ति ही स्वराज्य का आनन्द ले सकता है।" उन्होनें बालकों को प्राकृतिक रूप से उन पर बिना दबाव डाले, खींचतान किये बिना, ज्ञान को थोपे बिना, स्वानुभव द्वारा सिखाने पर बल दिया। उन्होनें कहा है – "सच पूछो तो उन्हें सिखाते हुए मैंने भी सीखा है। बच्चों ने मुझे नवीन जीवन दिया है।" वे उदाहरण के तौर पर कहते हैं कि, "किसान या माली वनस्पति – वर्द्धन के नियमों को वनस्पति दुनिया पर न थोप कर, उसे कुदरती रूप में फलने का मौका दें तो बागवानी में अधिक सफलता मिलेगी।"

परम्परागत अध्यापक केंद्रित शिक्षा प्रणाली का विरोध करते हुए उन्होनें कहा कि यह पद्धति बालक के व्यक्तित्व को कुंठित कर देती है उसके स्वाभिमान को भी आहत करती है। अतः बालक की रूचि, अभिरूचि, सामर्थ्य को जाने बिना उसे सकारात्मक एव उपयोगी शिक्षा नहीं दी जा सकती है। स्वावबलंबी बनाने हेतु, उन्हें सिखाने हेतु आत्माभिव्यक्ति, आत्म प्रकाशन का अवसर दिया जाना चाहिये। बालकों की बातों को ध्यानपूर्वक सुनना उन्हें कुछ कहने के लिये प्रोत्साहित करना, बातों को अच्छे ढ़ंग से कहने हेतु उन्हें प्रेरित करने से बालकों का स्वाभिमान विकसित होता है तथा उनमें आत्मविश्वास की वृद्धि होती है जिसके लिये उन्हें लोकगीत, लोक नाटक, बाल कथा, चित्रकारी, चित्रांकन साज–सज्जा, बागवानी, एवं अन्य , सृजनात्मक कार्य करने का अवसर दिया जाना चाहिये।

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पाठ्यक्रम – गिजूभाई ने बाल केंद्रित अवधारणा के अनुरूप पाठ्यक्रम में बाल सुलभ आवश्यकताओं को सिखाने हेतु खेल खेलना, गाना गाना, बाजा बजाना, प्रदर्शन करना, नाटक, कविता पाठ, भ्रमण, बाग बगीचा, सजावट, प्राकृतिक छटाओं का अवलोकन करने जैसी गतिविधियों को मानव व्यवहार के ज्ञान, भाव एवं क्रियात्मक पक्षों को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम में जोड़कर बालकों के सर्वांगीण विकास करने पर जोर दिया है। सामाजिक गुणों जैसे त्याग, परोपकार, सेवा भाव की भावना को विकसित करने हेतु उन्होंने बाल साहित्य को उपयोगी बताया। उनका मानना था कि, इससे बच्चों को उनकी अवस्था अनुरूप खुराक मिलती है, आनन्द मिलता है तथा उनके ज्ञान का विकास होता है।

शिक्षण विधि – गिजूभाई ऐसे प्रथम भारतीय शिक्षा शास्त्री हैं जिन्होंने शैशवावस्था से शिक्षा का कार्य प्रारम्भ किया है इसीलिये उन्होनें आवश्यक मनोवैज्ञानिक शिक्षण विधियों को प्रयुक्त करने की बात कही जिनमें खेल विधि, अनुकरण विधि, गीत विधि, प्रदर्शन विधि, स्मरण विधि, सुलेख विधि, वाचन विधि, प्रबलन विधि, अभिनय विधि, प्रश्नोत्तर विधि, कहानी विधि, आदि प्रमुख हैं। उनका मानना था कि , " यदि हम बालक का सम्पूर्ण विकास करना चाहते है तो घर एवं विद्यालय में एक ऐसा वातावरण बनाना होगा जिससे बालक स्वयं अपना विकास कर सके। उन्होनें अपनी कृति "प्राथमिक विद्यालय की शिक्षा पद्धतियां में बालक को कैसे पढ़ाये" पर विस्तार से चर्चा की है।

उनका मानना था कि व्यक्ति– व्यक्ति के विचारों में भिन्नता प्राकृतिक है परन्तु सिद्धान्त समान होता है, उसी तरह जितने पढ़ाने वाले उतनी ही पढ़ाने की पद्धतियां पर उससे आने वाले परिवर्तन में ज्यादा फर्क नहीं पड़ता है। पाठ्यक्रम का विकास व्यक्तिगत भिन्ताओं, प्रेरणाओं, मूल्यों, और सीखने के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त पर आधारित है तथा पाठ्यक्रम अधिक से अधिक क्रियात्मक गतिविधियों पर आधारित करके, मनोवैज्ञानिक विधि के अनुरूप होना चाहिए। बच्चों में कल्पना शक्ति के विकास में, उन्हें जागरूक करने, उनका अवधान केंद्रित करके, भावात्मक गुणों को विकसित करने में कहानी, ज्ञान वृद्धि एवं अस्पष्ट ज्ञान को स्पष्ट करने में अभिनय सहायक होता है। कहानी, लोक कथायें चरित्र निर्माण में ,उनके व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होती हैं। बच्चों के समक्ष शिक्षक को आदर्श रूप में रखना चाहिए। उन्होनें शिक्षण के आधार में – **1–** खेल, **2–** गीत **3–** कहानी कथन **4–** अभिनय व अभिनय गीत **5–** बागवानीको सम्मिलित किया।

उन्होनें पाठ्यक्रम एवं पाठ्क्रमेत्तर गतिविधियों को बराबर–बराबर से पाठ्यक्रम में निहित करने पर बल दिया जिससे बालक का चातुर्दिक विकास हो सके। विभिन्न विषय एवं व्याकरण पढ़ाने, गणित पढ़ाने हेतु उन्होनें नये–नये रोचक प्रयोग किया ।

शिक्षक – गिजूभाई स्वयं एक शिक्षक, विद्वान, सहृदय बाल प्रेमी, स्वतंत्रता के पोषक थे। अनके अनुसार जो अध्यापक अपने आन्तरिक गुणों, भावनाओं का प्रस्तुतीकरण बालकों के समक्ष नहीं कर पाता, न ही

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उनके साथ तादात्म्य स्थापित कर पाता निश्चय ही वह सफल अध्यापक नहीं है न ही बच्चे उनमें रूचि लेते हैं। उन्होनें अध्यापक में निम्नांकित गुणों को अपेक्षा की– अध्यापक को बाल मनोविज्ञानवेत्ता, के रूप में, ईर्ष्या–द्वेष, मिथ्या–दंश से दूर रह कर, स्नेहिल व्यवहार व संयत आचरण प्रदर्शित करते हुए सहानुभूतिपूर्वक, धैर्य से, बाल क्रियाओं का अवलोकन करना एवं आनंद लेना चाहिए। उनका मानना था जो बच्चों के बाल मानस का सम्पूर्ण अभ्यास करेगा, वही बाल विकास के नियमों को जान जायेगा। बालक की मानस, प्रकृति, विशेषता को जाने बिना शिक्षक कैसे बालक से विकास व शिक्षा की उम्मीद कर सकता है। "एक अच्छी इमारत बनाने हेतु एक मेसन के लिये ईंट, चूने जैसी निर्जीव वस्तुओं के गुणधर्म को जानना आवश्यक होता है, एक अच्छा माली फूल, पौधों को अनुकूल परिस्थिति देने के बाद अटूट धीरज व अचल श्रद्धा से इच्छित परिणाम की उम्मीद कर सकता है। मनुष्य, शिक्षक, माता पिता क्या बच्चों के गुण–धर्मों के बारे में प्रयोग, अनुभव, अनुसरण और अनुकरण से नहीं सीख सकते ?

उनका मानना था आज शिक्षक भी व्यापारियों की भांति समाज, राष्ट्र और व्यक्तिगत जरूरतों को ध्यान में रखकर बच्चों को शिक्षा देने का कार्य कर रहे हैं, जैसे कुम्हार व्यक्ति की जरूरतों के मुताबिक घड़ों को आकार देता है और यह भूल जाता कि मिट्टी का स्वभाव क्या है ? मिट्टी की जान क्या है, उसका उद्देश्य, उपयोग और भविष्य क्या है ?

अतः शिक्षकों को समर्पण की भावना से, भविष्य निर्माता के रूप में अपना कार्य करना चाहिये। उसे जौहरी की भांति बालक के गुणों का पारखी होना चाहिये।

शिक्षार्थी – बालकों को ईश्वर मान कर उनकी पूजा करना, पुजारी की भांति सच्चे भक्त की तरह सेवा करना, उन्हें अच्छा जीवन बिताने की कला सिखाने का उद्देश्य शिक्षा प्रणाली का होना चाहिए। गिजूभाई ने बालक की मानसिक आयु को ध्यान में रखकर धार्मिक शिक्षा देने की बात कही। उन्होनें, ज्ञान, भक्ति, कर्म तीनों धाराओं का समावेश करके बाल देवता की भांति उसके समक्ष सुदृढ़ व्यक्तित्व को विकसित करने सम्बन्धी विचार दिये।

विद्यालय – परंपरागत विद्यालय से हट कर अति आधुनिक एवं मनोविज्ञान के आधार पर विद्यालय की नीव होनी चाहिये। विद्यालय पूर्ण रूपेण मन्दिर के रूप में होना चाहये, जहां छोटे बच्चों हेतु आवश्यक उपयोगी उपकरण, खिलौने, वातावरण उपलब्ध हो'। बाल स्वतंत्रता पोषक के रूप में विद्यालय का वातावरण होना चाहिए।

अनुशासन – प्रकृतिवादी शिक्षा शास्त्रियों की भांति गिजूभाई भी स्वानुशासन, मुक्त्यात्यमक अनुशासन की प्रवृत्ति को विकसित करने के समर्थक थे। अनुशासन के विकास में सामूहिक गतिविधियां महत्वपूर्ण होती हैं। वातावरण सरल, स्वतंत्रत रूप से बाल विकास के दृष्टिगत होना चाहिये। गिजूभाई ने बालक की

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रश्नात्मक दृष्टि और रचनात्मक सोच के लिये अनुकूलताएं खड़ी करना, अनुकूल माहौल प्रदान करने को न सिर्फ शिक्षक का वरन् माता– पिता, अभिभावक का भी दायित्व माना है।

शिक्षा दर्शन सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता – गिजू भाई का शिक्षादर्शन प्रकृतिवादी, व्यावहारिक, बालमनोविज्ञान के सिद्धान्तों पर आधारित है। उनके शिक्षादर्शन में निहित विचारों को नीतिबद्ध रूप से पुनर्गठित, पुनर्नियोजित करके सम्पूर्ण बाल शिक्षा एवं शिक्षा प्रणाली को सार्थक बना कर तात्कालिक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। उन्होनें 'बाल देवों भव' का नारा देकर, बाल साहित्य की रचना कर, शिक्षा सम्बन्धी प्रयोग करके ,बाल शिक्षा में क्रांति लाने का कार्य किया। बच्चों से अगाध प्रेम के कारण जुगत भाई दवे ने उन्हें "बालकों के गांधी" नाम दिया। छोटे–छोटे बच्चों के नैसर्गिक गुणों को महत्व देना, स्वतंत्रता, संयम, क्रियात्मक गतिविधि को प्रमुखता देकर बाल्य जीवन को अनमोल मानकर उन्हें सिखाने पर जोर दिया। आत्माभिव्यक्ति, आत्मप्रकाशन, व्यैक्तिक भिन्नता, स्वतंत्रता, रूचि, इच्छा, आदि गुणों को पहचान कर भयमुक्त वातावरण में सिखाने के लिये शिक्षक को आदर्श आचरण प्रस्तुत करने की बात कही। आज के दौर में उनकी यह सोच, विचारधारा प्रासंगिक है एवं शिक्षा प्रणाली में इसे सन्निहित कर सिखाने का कार्य किया जा रहा है।

गिजू भाई ने बच्चों को सिखाने ही नहीं उनसे सीखने की महत्ता को भी बताया। गांधी जी की भांति सत्य एवं अहिंसा को अपने जीवन दर्शन में उतार कर प्रत्येक व्यक्ति को यथोचित सम्मान, दीनों हीनों एवं सर्वहारा वर्गों के उत्थान को उन्होनें अपने जीवन का ध्येय बनाया। वर्तमान में दीनों हीनों, निर्बल वर्गों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने उन्हें शिक्षित व जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है। शिक्षा के नवीन सिद्धान्त लर्नर सेंटर, करके सिखाने (Learning by Doing) या स्व– शिक्षण (Self Learning) को अपनाने पर जोर दिया जा रहा है। जिसकी संकल्पना गिजूभाई ने अपनी पुस्तक 'दिवास्वप्न' में की थी। उनके शिक्षा सम्बन्धी विचारों में छात्रों को जिज्ञासु, उत्साही, निडर, सेवा भावना से युक्त, संवाद, तर्क करने की क्षमता, अवलोकन, विश्लेशण, वर्गीकरण, करने सम्बन्धी गुणों को विकसित करने के साथ छात्रों में सृजनात्मक प्रवृत्ति को विकसित करने हेतु हस्तशिल्प, चित्रकला, मिट्टी के कार्यों से जोड़ने की बात कही गई। छोटे बच्चों के सम्बन्ध में गिजू भाई के द्वारा प्रतिपादित ये विचार आज के परिवेश में अति प्रासंगिक है, जहां बच्चों को गृह कार्य के बोझ से दब कर, बस्ते के बोझ से, दबाव से स्वतंत्र अभिव्यक्ति, कार्य करने की प्रवृत्ति का अवसर ही नहीं प्राप्त होता है। स्वमूल्यांकन, स्व –सुधार, दण्डात्मक व्यवस्था से दूर होकर शिक्षक को स्नेह, समर्पण की भावना से शिक्षण कार्य करना चाहिये। शिक्षक को बालकों के विकास हेतु उसका सृजनकर्ता बनकर कल्पनाशील, क्रियाशील एवं प्रयोगशील बनकर पारंपरिक परीक्षा पद्धति व शिक्षा के तनाव से मुक्ति दिलाने तथा संस्था एवं समुदाय को समन्वित कर के सिखानें की बात कही। शिक्षकों के सम्मान में वृद्धि एवं शिक्षकों

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

के शिक्षण कार्य सम्बन्धी प्रयोग करने की, पढ़ाने की स्वतंत्रता उन्हें देने सम्बन्धी उनके विचार अनमोल एवं प्रासंगिक हैं, जिनसे सार्थक दिशा प्राप्त कर शिक्षा व्यवस्था को प्रभावी व व्यावहारिक बनाया जा सकता है। माण्टेसरी का चिन्तन सिर्फ बाल मन्दिर तक सीमित था जब कि कथा– कहानी शास्त्र का बाल वाटिका तक ही केंद्रित था। गिजूभाई ने इससे आगे प्राथमिक शिक्षा एवं माध्यमिक शिक्षा तक विचार किया। उन्होनें शिक्षा को खेल, आनन्द, प्रेम एवं रोजमर्रा के क्रिया कलापों से जोड़ा। आज के परिवेश में बालकों को तनावमुक्त रखने हेतु 'Happiness Curriculum' पर कार्य किया जा रहा है जिसकी नींव गिजूभाई ने पहले ही रख दी थी। वर्तमान बदलते हुए दौर में शिक्षक को कल्पनाशील, सृजनकर्ता के रूप में, समर्पण की भावना के साथ अपेक्षित शिक्षा का प्रसार करना होगा, तभी बच्चों को सम्पूर्ण मानव बना पाना सम्भव होगा। इस प्रकार गिजूभाई द्वारा प्रतिपादित प्रयोग व सिद्धान्तों को पुनर्जीवित कर शिक्षा व्यवस्था में जोड़ कर उसे और सार्थक एवं प्रभावी बनाया जा सकता है।

संदर्भ

ग्रोवर डॉ0 इन्द्रा – संसार के महान शिक्षाशास्त्री विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी 1978

चौबे डॉ0 अखिलेश – चौबे डॉ0 एस.पी. एण्ड भारत और पश्चिम के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री भवदीय प्रकाशन अयोध्या, 2002

बधेका गिजूभाई – दिवास्वप्न अनुवादक त्रिवेदी काशीराम राष्ट्रीय पुस्तक न्यास बसंतकुंज दिल्ली, 1991

बाला डॉ0 निधि, – शिक्षा के दार्शनिक व सामाजिक परिप्रेक्ष्य – आलोक प्रकाशन लखनऊ, बाजपेई डॉ0 अमिता शुक्ला डॉ0 सावित्री 2012

राजपूत, जगमोहन सिंह – क्यों तनाव ग्रस्त है शिक्षा व्यवस्था, किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, 2008

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies